

DPN 6133

Title : अस्थि प्रक्षालन विधि ASTHIPRAKṢĀLĀNA VIDHI

Run. No. 6824

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 20.5 x 8

Folios 6

Lines (in a page) 8 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS ७२५ / ७२५

Ruler / place

Pharindra Ratna

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Bajracharya.

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ वंद्यवाहाय नमस्तस्मै नमः ॥ मासमा सोम्या १० किन्मा याङ्ग ॥ संवत् ७२५ जोष कृष्ण
तृतीया

१ नमः श्यागात्मायः॥

वाहनं वज्रानिष्ठमकुण्डलं नकुत्वा। यथातथातनं मृगकयकयस्य दृढयव
कवकमूडा। शाकमूलिनिर्मायः गदनं गतं क्लानसत्त्वशावाहनं यथेष्टं नय्यथा
नकुत्वा रिषक। मालारिषक। वज्रघणनामः गतः यो कवकमणिधिष्ठान। ग्राहक
होमस्य युष्मिन् गतिं सिद्धीं नय। मार्गशाधनं गदनं गतं। यिरुवनगत्वा। डतन
जिबडीयान्॥ दक्षिणदिग्वायाध्वं। वज्राश्वकलशं। दक्षिणयाध्वं वनोष्णीषं
नय्युष्मयधोक्ताय॥ यूनययिगिबयुष्मं विजयकलशं भक्तं। सुवकसिकेकल
गयाध्वं विजयकलशं॥ भवकलशं रुज्जनकार्यं। सीदामचक्रभेन॥
मृत्तियुक्तालनेऽविधीयते॥ आत्मशागाननकं॥ मण्डलस्य दक्षिणरागः मृत्ति
१ वकस्य यथा विध्यगमाजकस्य यनिष्ठांशं कसिं कसिं गतान्मलायना

शाधनमण्डलं रावथतं॥ गतमण्डलस्य मध्यपीठं मृत्तया लयकं॥ मध्यसंशाकमू
निचिद्राशयः। यूर्ध्वसवदयालि। दक्षिणसंज्ञाश्रीयः। यथिमसंज्ञं वक्ववलिं
डरुपसवदयाश्रीयः। मृत्तयगताजाजः। नैऋतं विध्यमक। वायव्यं विविजिनि।
उष्णं न्यागिनां गयतं। र्यागुलिदालसीवज्राकूशं। वज्राश्वकलशं वज्राध्वं। सुव
कोलशं। ध्रुवावयवद्वयं। ध्रुवगायतिना॥ गतं न समयसत्त्व क्लानसत्त्व शावाहनं॥ वज्र
कूटकमूडामकुण्डलं यूर्जानुतिपूनमृत्तिसंज्ञं लायनिशाकमूनेडं लाश्रीयनस्मिना
समयसत्त्वनिर्मायः। वज्राकूशं। दिना क्लानशावाहनं॥ धर्मं लरावन्तु॥ कलं गवि
कं पीठमृत्तया लयकं॥ मण्डलमध्यसंज्ञं॥ कलं मलावन्तु॥ निर्वाजनं यूर्जा
न्यथेयं यूर्जान्यासं यथेष्टमायादि॥ मण्डलस्य यूर्जाध्वं दिव्यं निरवावहं॥



BRU

0 CMS 5 10 15 20

स्यान्ननक्षालं नृमिष ॥ ॐ तिग्गतिदर्शनमस्तु ॥ ॐ यक्ष १ यक्षोद्भवश्च यथावत्तंगच्छ
 कुम्भार ॥ यं ० थं सर्मगलगाथा यत्तु ॥ यन्मंगलसकलसत्त्वदिर्जनस्य व
 द्यस्य दायनदिनस्य विद्युद्वद्वः ॥ यत्तु क्क म्क चिन्नस्य सत्त्वान्मस्य तन्मंगलरुव
 उर्गयनमात्रिधर्क ॥ यन्मंगलसूलचनवायुदिनस्य धम्मस्यर्गेनकधिनस्य नि
 मूरुनस्य ॥ लोकत्रयप्रविदिर्गस्य निजान्मकस्य न्मज्जलं रुवत्तु यं यवमात्रि
 धर्क ॥ यन्मङ्गलं यववधर्मेधवनिर्त्यं सत्त्वमिगस्य दिनस्य नृगणस्य साध
 १ सत्त्वायाकानवत्तु नस्य सर्मगलस्य न्मङ्गलं रुवत्तु यं यवमात्रिधर्क
 ॐ तिग्मंगलगाथा नृमिष यत्तु न धर्तु ॥ यत्तु मत्तु ॥ भल्लयाय विमान

सुदृक्कद्वर्गे व॥ दृक्कद्वर्गे व॥ दृक्कद्वर्गे व॥ दृक्कद्वर्गे व॥ द्विधं गेवरु गसा न॥
इत्य वनके क॥ क॥ स यूगा॥ म॥ उल्लयूजा धनिधून काव
बृह्मि स॥ ल॥ धून काव॥ खानगाने ददकायूजा॥ ज॥ णी वाद
वजम॥ उल्लविसर्जन॥ बृह्मि खायावर्गे॥ सकलवर्गे स॥ णी
न॥ उ॥ गिथ स॥ यूयके॥ धन वि॥ वि॥ वि॥ द॥ स॥ नि॥ द॥ वि॥ य॥ इ॥
वा॥ पि॥ खो॥ र्वा॥ वि॥ भ॥ स॥ क॥ रि॥ ने॥

5

नृद्धि विसृज न॥ कृत्व वसव सत्वाथे वादि॥ लज सकलं व लक्ष्मिद
 वृत्तचय थं न॥ वलिच्छाय थान स॥ दृष्टा यिष्ठा वं धिले॥ नृद्धि विसृज न॥
 दृष्टव न वान वं न॥ गन था य इ न नून॥ ध कृ कृ कृ न सा नृद्धि ल क थं न॥
 ल था या व॥ वृत्त दृष्ट य कृ ग या नृत्त न थं नृत्त उ दं द व या थं॥ ग नृ
 स दृ थ ठा व थं॥ श त्वा ल नृत्त उ कृ या य माल॥ जंग कम नि स्थि
 मल जग ता थं सा॥ नृत्त उ ग ति य वि॥ श ४ यो॥ स्व गा व ३ इ द व थं
 नृत्त नृत्त॥ मल ग ठा व ल था हा मान॥ धि ति नृत्त मू मान
 मी उ ल धि नृत्त सान ता नृत्त य नृत्त या य॥ आ गी वा द क ल ता रि थ व थं नृत्त

नृत्त कति पच न॥

0

5

जंग म विसृज न या ठा व वृत्त स ल व न ध व न या य थं॥ क ल स व
 स य य थं॥ नृद्धि विसृज न या क ल थं॥ ल ज मी उ ल स न या क ल स
 वृत्त व या थं॥ य न माल॥ लि नृत्त कृ न म माल॥ कि सानि उ को॥ य ल सा य म
 य वि य॥ म थ ल सा न वृत्त वृत्त थं॥ ध ल स रू ध कृ कृ कृ न व या व॥ ध ल धु रू कृ
 या य॥ इ व थं वृत्त॥ ध यालि न नृद्धि न ल क थं न था या व॥ वृत्त दृष्ट य कृ ग या॥ नृ
 ग न थं नृत्त उ दं द व थं॥ द य का व॥ ल क थं नृत्त इ थ ठा व थं॥ य नि स्था या
 य मान॥ धि ति हा ल मू मान॥ जंग म श व न मू मान॥ ध ल स रू ध न का व॥ जि म दृ कृ
 न हा माल॥ वृत्त वा हा न ज य ल व व नु या॥ मी स रू भा क या थ क लि या या ठा॥ स व न

नृत्त कति पच न॥